श्रीमद्भागवत रसिक कुटुंब

श्री दामोदर अष्टकम्

नमामीश्वरं(म्) सच्-चिद्-आनन्द-रूपं(म्)

लसत्-कुण्डलं(ङ्) गोकुले भ्राजमानम्

यशोदा-भियोलूखलाद् धावमानं(म्)

परामृष्टम् अत्यन्ततो द्रुत्य गोप्या ॥ 1॥

वह भगवान जिनका रूप सत, चित और आनंद से परिपूर्ण है, जिनके मकरो के आकार के कुंडल इधर उधर हिल रहे है, जो गोकुल नामक अपने धाम में नित्य शोभायमान है, जो (दूध और दही से भरी मटकी फोड़ देने के बाद) मैय्या यशोदा की डर से ओखल से कूदकर अत्यंत तेजीसे दौड़ रहे है और जिन्हें यशोदा मैय्या ने उनसे भी तेज दौड़कर पीछे से पकड़ लिया है ऐसे श्री भगवान को मै नमन करता हू ।।1।।

रुदन्तं(म्) मुहुर्नेत्रयुग्मं(म्) मृजन्तम्

कराम्भोज-युग्मेन सातङ्क-नेत्रम्

मुहुः(श्) श्वास-कम्प-त्रिरेखाङ्क-कण्ठ

स्थित-ग्रैवं(न्) दामोदरं(म्) भक्ति-बद्धम् ॥ 2॥

(अपने माता के हाथ में छड़ी देखकर) वो रो रहे हैं और अपने कमल जैसे कोमल हाथों से दोनों नेत्रों को मसल रहे है, उनकी आँखे भय से भरी हुई है और

उनके गले का मोतियों का हार, जो त्रि-पंक्तिबद्ध है, रोते हुए जल्दी जल्दी श्वास लेने के कारण इधर उधर हिल-डुल रहा है , ऐसे उन श्री भगवान् को जो रस्सी से नहीं बल्कि अपने माता के प्रेम से बंधे हुए है मै नमन करता हु ।। 2 ।।

इतीदृक् स्वलीलाभिरानंद कुण्डे

स्व-घोषं(न्) निमज्जन्तम् आख्यापयन्तम्

तदीयेशितज्ञेषु भक्तिर्जितत्वम्

पुनः(फ्) प्रेमतस्तं(म्) शतावृत्ति वन्दे ॥ 3॥

ऐसी बाल्यकाल की लीलाओं के कारण वे गोकुल के वासियों को आध्यात्मिक प्रेम के आनंद कुंड में डुबो रहे हैं, और जो अपने ऐश्वर्य सम्पूर्ण और ज्ञानी भक्तों को ये बतला रहे है कि "मै अपने ऐश्वर्य हीन और प्रेमी भक्तो द्वारा जीत लिया गया हूं", ऐसे उन दामोदर भगवान को मै शत शत नमन करता हूं ।।3।।

वरं(न्) देव! मोक्षं(न्) न मोक्षावधिं(म्) वा

न चान्यं(म्) वृणेऽहं(म्) वरेशादपीह

इदं(न्) ते वपुर्नाथ गोपाल बालं(म्)

सदा मे मनस्याविरास्तां(ङ्) किमन्यैः ॥ 4॥

हे भगवन, आप सभी प्रकार के वर देने में सक्षम होने पर भी मै आप से ना ही मोक्ष की कामना करता हूं, ना ही मोक्षका सर्वोत्तम स्वरुप श्री वैकुंठ की इच्छा रखता हूं, और ना ही नौ प्रकार की भक्ति से प्राप्त किये जाने वाले कोई भी वरदान की कामना करता हूं । मै तो आपसे बस यही प्रार्थना करता हूं कि आपका ये बालस्वरूप मेरे हृदय में सर्वदा स्थित रहे, इससे अन्य और कोई वस्तु का मुझे क्या लाभ?।।4।।

इदं(न्) ते मुखाम्भोजम् अत्यन्त-नीलैर्

वृतं(ङ्) कुन्तलैः(स्) स्निग्ध-रक्तैश्च गोप्या

मुहुश्चुम्बितं(म्) बिम्बरक्ताधरं(म्) मे

मनस्याविरास्तामलं(म्) लक्षलाभैः ॥ 5॥

हे प्रभु, आपका श्याम रंग का मुखकमल जो कुछ घुंघराले बालों से आच्छादित है, मैय्या यशोदा द्वारा बार बार चुम्बन किया जा रहा है, और आपके ओष्ठ बिम्बफल जैसे लाल है, आपका ये अत्यंत सुन्दर कमलरुपी मुख मेरे हृदय में विराजित रहे । (इससे अन्य) सहस्र वरदानों का मुझे कोई उपयोग नहीं है ।।5।।

नमो देव दामोदरानन्त विष्णो

प्रसीद प्रभो दुःख-जालाब्धि-मग्नम्

कृपा-दृष्टि-वृष्ट्याति-दीनं(म्) बतानु

गृहाणेष मामज्ञमेध्यक्षिदृश्यः ॥ 6॥

हे प्रेम के सागर! दामोदर! हे अनंत विष्णु! मुझ पर प्रसन्न हो! मैं दुःख के समुद्र के बीच में डूब रहा हूं। मुझ पर अपनी कृपा बरसाओ और मुझ पर अपनी कृपालु अमृत दृष्टि डालो।

कुबेरात्मजौ बद्ध-मूर्त्यैव यद्वत्

त्वया मोचितौ भक्ति-भाजौ कृतौ च

तथा प्रेम-भक्तिं(म्) स्वकां(म्) मे प्रयच्छ

न मोक्षे ग्रहो मेऽस्ति दामोदरेह ॥ 7॥

हे दामोदर (जिनके पेट से रस्सी बंधी हुयी है वो), आपने माता यशोदा द्वारा ओखल में बंधे होने के बाद भी कुबेर के पुत्रो (मणिग्रिव तथा नलकुबेर) जो नारदजी के श्राप के कारण वृक्ष के रूप में मूर्ति की तरह स्थित थे, उनका उद्धार किया और उनको भक्ति का वरदान दिया, आप उसी प्रकार से मुझे भी

प्रेमभक्ति प्रदान कीजिये, यही मेरा एकमात्र आग्रह है, किसी और प्रकार की कोई भी मोक्ष के लिए मेरी कोई कामना नहीं है ।।7।।

नमस्तेऽस्तु दाम्ने स्फुरद्-दीप्ति-धाम्ने

त्वदीयोदरायाथ विश्वस्य धाम्ने

नमो राधिकायै त्वदीय-प्रियायै

नमोऽनन्त-लीलाय देवाय तुभ्यम् ॥ 8॥

हे दामोदर, आपके उदर से बंधी हुयी महान रज्जू (रस्सी) को प्रणाम है, और आपके उदर, जो निखिल ब्रह्म तेज का आश्रय है, और जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का धाम है, को भी प्रणाम है । श्रीमती राधिका जो आपको अत्यंत प्रिय है उन्हें भी प्रणाम है, और हे अनंत लीलाऐ करने वाले भगवन, आपको प्रणाम है ।।8।।